तुम संवार दो

ममता श्री सिंह*

कच्ची मिट्टी के मानिंद हूँ, चाक में रखकर, तुम संवार दो,
संस्कारों, संस्कृति से मेरे, व्यक्तित्व को निखार दो,
हे शिक्षक, मेरे भीतर पल रहे तमस से, मुझें उबार दो,
सपने आँखों में बसे हैं, उसे हकीकत में ढाल दो,
मेरे कोमल पंखों को, हौसलों से भर दो,
चुना है, तुम्हें ईश्वर ने, इस नेक काम के लिए,
जो हो सके तो, अपनी साँसें निसार दो,
हे शिक्षक, मेरे भीतर, पल रहे तमस से, मुझे उबार दो।

तुममें, पलते हैं, निर्माण, करने की क्षमता,
स्वयं तपकर, प्रकाशवान करने की प्रबलता,
तुम माँ सरस्वती के वरदान हो,
ज्ञान, बुद्धि, बल से, मेरा जीवन संवार दो,
हे शिक्षक, मेरे भीतर, पल रहे, तमस से मुझे उबार दो।

तुम अपने मूल्यों से, मुझें जीवंत करते हो,
एक पौध-सा, मुझे हर, रोज़ तुम सींचते हो,
मेरे वजूद को, आकार देकर, मुझे संपूर्ण बनाते हो,
तुममें है, धैर्यता, सहनशीलता, तुम ज्ञान के भंडार हो,
हे शिक्षक, मेरे भीतर, पल रहे, तमस से मुझे उबार दो।

**मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 4, रामकृष्ण पुरम, दिल्ली 110 021